उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद

U.P. Council of Agricultural Research

अष्टम तल, किसान मण्डी भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226 010

8th Floor, Kisan Mandi Bhawan, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226010

पत्रांक:759/एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनॉक: 05.09.2024

दिनांक	:	05 सितम्बर, 2024
समय	:	12:00 बजे
स्थान	:	उपकार सभाकक्ष
उपस्थिति	:	संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की वर्ष 2024–25 की पन्द्रहवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियाँ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2024–25 की पन्द्रहवीं बैठक श्री पियूष कुमार शर्मा, सचिव, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 05 सितम्बर, 2024 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या के राईस ब्रीडर व मौसम वैज्ञानिक; गन्ना विभाग; पशुपालन विभाग; उद्यान विभाग; रेशम विभाग; तथा उ.प्र. डिजास्टर मैनेजमेंट एथारिटी, लखनऊ एवं उपकार के वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने भाग लिया। उक्त के अतिरिक्त बैठक में कृषि विभाग; भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ; आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ तथा चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर के पादप रोग वैज्ञानिकों ने ऑनलाइन प्रतिभाग किया।

प्रथम सप्ताह का मौसम पूर्वानुमान (06 से 12 सितम्बर, 2024)

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार प्रदेश में आरंभिक चरण के दौरान प्रदेश के अनेक हिस्सों में हल्की से मध्यम वर्षा के साथ दक्षिणी भाग में कहीं–कहीं भारी वर्षा तथा कहीं कहीं तड़ित झंझावात एवं वज्रपात होने की संभावना है। प्रदेश के उत्तरी पूर्वी मैदानी क्षेत्र, भाभर तराई क्षेत्र, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र, मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग एवं दक्षिणी पश्चिमी अर्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग में सामान्य से कम जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में सामान्य अथवा सामान्य से अधिक वर्षा होने की संभावना है।

द्वितीय सप्ताह का मौसम दृष्टिकोण (13 से 19 सितम्बर, 2024)

इस सप्ताह के दौरान प्रदेश के उत्तरी पूर्वी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग, भांभर तराई क्षेत्र के पूर्वी भाग, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र, मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में सामान्य से कम वर्षा होने जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में सामान्य अथवा सामान्य से अधिक वर्षा होने की संभावना है।

मानसून ऋतु (01 जून से 05 सितम्बर, 2024) के दौरान उत्तर प्रदेश में 626.4 मि.मी. के दीर्घकालिक औसत के सापेक्ष कुल 537.8 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई जो सामान्य से 14 प्रतिशत कम है। इस दौरान पूर्वी उत्तर प्रदेश में 661.2 मिमी. के दीर्घकालिक औसत के सापेक्ष 15 प्रतिशत कम कुल 560.5 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई, जबकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 577.7 मि.मी. के दीर्घकालिक औसत वर्षा के सापेक्ष कुल 505.3 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई जो सामान्य से 13 प्रतिशत कम रही। मानसून ऋतु के दौरान अभी तक प्रदेश के बलरामपुर जनपद में सर्वाधिक 1019.1 मि.मी. वर्षा दर्ज की गई है।

कृषि विभाग से दिनांक 28 अगस्त, 2024 तक प्राप्त आच्छादन आंकड़ों के अनुसार कुल खरीफ फसलों के लिये निर्धारित लक्ष्य 102.05 लाख हे. के सापेक्ष 102.21 लाख हे. की बुवाई की जा चुकी है जो लक्ष्य का 100.16 प्रतिशत है। धान के लक्ष्य 61.24 लाख हे. के सापेक्ष 62.62 लाख हे. की पूर्ति की जा चुकी है जो लक्ष्य का 102.26 प्रतिशत है, मक्का फसल लक्ष्य 8.81 लाख हे. के सापेक्ष 8.18 लाख हे. की बुवाई, ज्वार में 2.99 लाख हे. के सापेक्ष 2.95 लाख हे. की बुवाई, बाजरे के लक्ष्य 10.61 लाख हे. के सापेक्ष 10.22 लाख हे., अरहर लक्ष्य 3.68 लाख हे. के सापेक्ष 3.60 लाख हे., उर्द के लक्ष्य 7.57 लाख हे. के सापेक्ष 6.91 लाख हे., मूंग लक्ष्य 0.50 लाख हे. के सापेक्ष 0.48 लाख हे., मूंगफली लक्ष्य 1.32 लाख हे. के सापेक्ष 2.69 लाख हे., श्री अन्न 0.63 लाख हे. के सापेक्ष 0.55 लाख हे. तथा तिल लक्ष्य 4.25 लाख हे. के सापेक्ष 3.53 लाख हे. की बुवाई की जा चुकी है।

प्रदेश में मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को अगले दो सप्ताह हेतु कृषि प्रबन्धन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:-

- वातावरण में तापक्रम एवं नमी की अधिकता रहने से फसलों में रोग एवं कीट प्रभावी होंगे अतः कीट नियंत्रण हेतु पर्यावरण हितैषी उपायों यथा प्रकाश-प्रपंच, बर्ड पर्चर, फेरोमोन ट्रैप, ट्राइकोग्रामा तथा रोग नियंत्रण हेतु ट्राइकोडर्मा का प्रयोग करें।
- कम वर्षा वाले क्षेत्रों में पौधो के समुचित विकास हेतु विशेष रूप से धान में कल्ले व गाँठ बनने की अवस्था में पर्याप्त नमी बनाये रखे ताकि भूमि में दरारें न पड़ने पायें।
- जिन क्षेत्रों में पर्याप्त वर्षा नहीं हुई है, वहाँ के सब्जी उत्पादकों को सलाह दी जाती है कि वे अल्प अवधि एवं कम पानी में भी अच्छी उपज प्राप्ति हेतु पालक, मूली, गाजर, शलजम, चुकन्दर, मेथी व धनिया आदि की खेती करें।
- प्राकृतिक एवं जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाय, कृषि रसायनों का प्रयोग वैज्ञानिक सलाह पर ही संस्तुति अनुरूप किया जाय।
- पशुओं को अन्तः कृमिनाशक तथा वाह्य परजीवीनाशक दवाई पशुचिकित्सक की सलाह पर दें।
- अगेती आलू की बुवाई 15 सितंबर से प्रारंभ होगी अतः शीत भण्डारण गृह से आलू निकालकर उसे उपचारित कर दें।

धान की खेती

- रोपाई के 45-50 दिन बाद द्वितीय टॉप ड्रेसिंग नत्रजन की शेष बची हुई मात्रा से करें। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाय कि यूरिया की टॉप ड्रेसिंग करते समय खेत में पर्याप्त नमी उपलब्ध हो।
- धान में तनाबेधक, पत्ती लपेटक, बंका कीट एवं हिस्पा के नियंत्रण हेतु बाईफेन्थ्रिन 10 प्रतिशत ई.सी. 500 मिली. प्रति हे. अथवा क्यूनॉलफॉस 25 प्रतिशत ई.सी. 1.50 लीटर 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें अथवा कारटाप हाइड्रोक्लोराइड 4जी 18 कि.ग्रा. मात्रा को रेत या यूरिया के साथ मिलाकर 3 से 5 से.मी. स्थिर पानी में बुरकाव करें।
- धान की जस्ता की कमी से खैरा रोग होने पर 05 से 10 किग्रा. जिंक सल्फेट एवं 2 प्रतिशत यूरिया प्रति हेक्टेयर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- धान में पर्ण झुलसा के लक्षण दिखने पर कॉपर आक्सीक्लोराइड 500 ग्राम एवं स्ट्रेप्टोसाइक्लीन 15 ग्राम प्रति हेक्टेयर 500 ली. पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- वर्तमान मौसम शीथ ब्लाइट के अनुकूल है अतः प्रकोप दिखाई देने पर हेक्साकोनाजोल 5.0 ई.सी. की 1.0 ली. मात्रा को 500-750 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- वर्तमान मौसम भूरा धब्बा रोग के लिये अनुकूल है अतः प्रकोप होने पर मैकोजेब 75 प्रतिशत डब्लू.पी. अथवा जिनेब 75 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2.0 किग्रा. मात्रा 500-750 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- धान की बासमती समूह की प्रजातियों में बकानी रोग के लक्षण दिखाई देने पर पौधों को समूल उखाड़कर मिट्टी में दबा दें तथा कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत डब्लू.पी. 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

मक्का की खेती

- मक्का में तना छेदक के 10 मृत गोभ होने पर कार्बोफ्यूरान 3 जी 20 किग्रा. अथवा डाईमेथोएट 30 प्रतिशत ई.सी. 1.0 ली. प्रति हे. अथवा क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई.सी. 1.50 ली. का प्रति हे. बुरकाव/500-600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- जैविक विधि से कीट नियंत्रण हेतु ट्राइकोग्रामा अण्डयुक्त ट्राईकोकार्ड 50000 प्रति एकड़ की दर से पत्तियों की निचली सतह पर 5-6 दिन के अन्तर से दो बार नत्थी करें।
- मक्के में फाल आर्मी वर्म का प्रकोप होने पर 10 से 20 प्रतिशत क्षति की अवस्था में प्रभावी नियंत्रण हेतु क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल 18.5 प्रतिशत एस.सी. 0.4 मिली. प्रति लीटर पानी अथवा स्पाइनोसैड 0.3 मिली. प्रति लीटर पानी अथवा थायामेथाक्सॉम 12.6 प्रतिशत+लैम्ब्डासाइहैलोथ्रिन 9.5 प्रतिशत 0.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिये।

अरहर की खेती

- पूर्वी उत्तर प्रदेश में बाढ़ या लगातार वर्षा के कारण बुवाई में विलम्ब होने की दशा में सितम्बर के प्रथम पखवारे में बहार एवं पी.डी.ए.–11 की शुद्ध फसल के रूप में बुवाई की जा सकती है, परंतु कतार से कतार की दूरी 30 से.मी. एवं बीज की मात्रा 20 से 25 कि.ग्रा. प्रति हे. की दर से प्रयोग करें।
- अरहर में पत्ती लपेटक का प्रकोप दिखाई देने पर डाईमेथोएट 30 ई.सी. 1 लीटर या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 200 मिली. प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।

उर्द–मूँग की खेती

- उर्द व मूंग में सफेद मक्खी, तनाबेधक तथा चूसक कीटों के नियंत्रण हेतु ईमामैक्टीन बेन्जोएट 80 ग्रा. तथा थाईमेथोक्सम 200 मि.ली. प्रति एकड़ की दर से 200 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

तोरिया की खेती

- तोरिया की सम्पूर्ण उ.प्र. हेतु संस्तुत प्रजातियों टा–9, पी.टी.–303, भवानी मध्य उ.प्र. हेतु संस्तुत टाइप–36 तथा तराई क्षेत्र हेतु संस्तुत प्रजाति पी.टी.–30 की बुवाई करें।

मूंगफली की खेती

- मूंगफली में जड सड़न एवं टिक्का रोग लगने का समय है अतः सतर्क रहें। प्रकोप होने पर खड़ी फसल पर मैंकोजेब अथवा कार्बेन्डाजिम 50 डब्लू.पी. 225 ग्राम/हे. अथवा जिनेब 75 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण 2.5 किग्रा. अथवा जीरम 27 प्रतिशत तरल के 3 लीटर अथवा जीरम 80 प्रतिशत के 2 किग्रा. के 2–3 छिड़काव 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर 10 दिन के अन्तर पर करें।
- मूंगफली में सफेद गिडार के प्रबंधन हेतु खड़ी फसल में क्लोरपाईरीफॉस 20 ई.सी. 4 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से जड़ों में अथवा सिंचाई के माध्यम से डालें।
- यह मौसम टिक्का रोग (पत्र दाग) के लिये अनुकूल है। अतः रोग का संक्रमण दिखाई देने पर मैकोजेब अथवा कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत डब्लू.पी. 225 ग्राम प्रति हेक्टेयर या जिनेब 75 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण 2.5 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर अथवा जीरम 80 प्रतिशत 2 किग्रा प्रति हे. के 2 से 3 छिड़काव 500–600 लीटर पानी मे घोलकर 10 दिन के अंतराल पर करें।

सोयाबीन की खेती

- सोयाबीन की फसल में पत्तियों को काटने वाले कीट, रस चूषक तथा गर्डल वीटिल का प्रकोप होने पर क्यूनालफास 25 ई.सी. 1.5 लीटर अथवा इथियान 50 ई.सी. 1.5 लीटर 500 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

तिल की खेती

- तिल में रोएंदार सूँड़ी (विहार हेयरी कैटर पिलर) का प्रकोप होने पर प्रारम्भिक अवस्था में अण्ड समूह/सूँड़ियों को पत्तियों सहित तोड़कर केरोसिन युक्त पानी में डालकर नष्ट कर दें अथवा क्यूनालफास 25 ई.सी. 1.5 लीटर 500–600 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें।

गन्ना की खेती

- शरदकालीन गन्ना बुवाई का समय आ रहा है अतः बुवाई हेतु रोगरोधी नवीन गन्ना किस्मों यथा को.शा. 13235, को.लख. 14201, को. 15023, को.शा.17231, को.शा. 18231, को. लख. 16202, को.शा. 16233 आदि प्रदेश हेतु स्वीकृत किस्मों का ही बीज गन्ना सुरक्षित करें।
- बीज, गन्ना शोध संस्थान, गन्ना विकास परिषद की पौधशाला, बीज गन्ना उत्पादक कृषक आदि जैसे अधिकृत स्थानों से ही प्राप्त करें।
- शरदकालीन बुवाई हेतु खेत खाली न होने की दशा में एस.टी.पी. एवं पॉली ट्रे विधि से नर्सरी तैयार कर खेत खाली होने पर पौधों की रोपाई करें।
- बेधक कीटों के जैविक नियंत्रण के लिये 50 हजार ट्राइकोग्रामा अंड युक्त ट्राइकोकार्ड प्रति हेक्टेयर क्षेत्रफल में 8 से 10 स्थानों पर लगायें। कार्ड टुकड़ों में काटकर पंत्तियों की निचली सतह पर नत्थी कर दें। यह कार्य 10 दिनों के अंतराल पर दोहरायें।
- लाल सड़न रोग से प्रभावित खेतों में मेड़बंदी कर दें, जिससे संक्रमित सिंचाई जल से स्वस्थ फसल प्रभावित न हो। लाल सड़न रोग से प्रभावित क्लंप/मूढ़ को उखाड़कर नष्ट कर दें तथा उखाड़े गये स्थान पर ट्राइकोडर्मा से उपचार करें तथा बचाव हेतु मिथाइल 0.2 प्रतिशत की ड्रेचिंग करें।

- कम वर्षा वाले स्थानों पर प्रायः पायरीला का प्रकोप देखने को मिलता है अतः परजीवी (इपीरिकेनिया मेलानोल्यूका) न पाये जाने की स्थिति में क्वीनालफास 25 प्रतिशत घोल 0.80 ली. प्रति हे. 625 ली. पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- गन्ने की सिंगल बड/बड चिप विधि से नर्सरी तैयार करें
- गन्ना समिति में नई सदस्यता ऑनलाइन ग्रहण करें। गन्ने का कच्चा कैलेण्डर (प्री कैलेण्डर) जांच लें त्रुटि होने पर सुधार करवायें।

सब्जियों की खेती

- बैंगन की फसल को तना और फलबेधक कीट से बचाव के लिये क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल रसायन की 1.0 मिली. मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर 10–15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।
- बैंगन की फसल में फाईमोप्सिस ब्लाईट फलसड़न से बचाव के लिये थायोफिनेट मिथाइल की 1.00 से 1.50 मि.ली. मात्रा/ली. पानी के साथ घोल 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें। फलों की तुड़ाई के बाद स्प्रे करें एवं अगली तुड़ाई 15 दिन बाद करें।
- हल्दी एवं अदरक में जल निकास का प्रबंध रखें तथा संस्तुति के अनुसार नत्रजन का प्रयोग करें।
- बेहन हेतु पातगोभी, मध्यकालीन फूलगोभी, शिमला मिर्च तथा टमाटर आदि की नर्सरी में बुआई करें तथा पूर्व में बोई गई तैयार पौध की रोपाई करें।
- परवल की गॉठ युक्त लताओं की रोपाई यथाशीघ्र समाप्त करें।
- शकरकन्द की संस्तुत प्रजातियों का कन्द लगायें ताकि समय से लतायें मिल सकें।
- बैंगन व मिर्च की तैयार बेहन की मेड़ों पर रोपाई करें।
- शाकभाजी फसलों में विषाणु जनित रोगों का प्रकोप होने पर प्रभावित पौधों को खेत से निकालकर जला दें अथवा मिट्टी में दबा दें तथा संस्तुत अंतःप्रभावी कीटनाशकों को छिड़काव करें।
- आलू बुवाई से 7 से 10 पूर्व बीज आलू को शीतगृह से बाहर निकालकर छायादार स्थान पर फेलायें तथा उनमें से अंकुर रहित (अखुवाविहीन), कटे, गले, सड़े बीज कंदों को छांटकर अलग कर दें और यदि शीतगृह में ही भण्डारित बीज में अंकुर निकल आये हो तो उन्हें भी हटा दें क्योंकि यदि ऐसे बीजों की बुवाई की जायेगी तो अंकुर सूखकर नष्ट हो जायेगे और खेत में उनमें पुनः अंकुरण में अधिक समय लगेगा। छटे हुये बीज आलुओं को अंकुरण हेतु एक सप्ताह के लिये टोकरियों या बोरों में रखें।
- यदि बीज आलू शीतगृह में भण्डारण करने से पूर्व उपचारित न किया गया हो तो शीतगृह से निकालकर छटाई के तुरंत बाद बोरिक एसिड कि 3 प्रतिशत घोल में 30 मिनट तक उपचारित करके छायादार स्थान में सुखाकर अंकुरण हेतु टोकरियों या बोरों में रखें। अंकुरित बीज आलू को उपचारित न करें।
- अगेती आलू की किस्में कुफरी चंद्रमुखी तथा कुफरी बहार किस्मों की बुवाई का समय 15 सितम्बर से प्रारंभ है अतः किसान भाई अग्रिम बीज की व्यवस्था कर लें।

बागवानी

- केले में एक तलवार पुत्ती को छोड़ते हुए शेष पुत्तियों की कटाई करें तथा फल वाले पौधों में स्टेकिंग (सहारा) दें।
- केला में पर्णचित्ती एवं एन्थ्रेकनोज रोग के नियंत्रण हेतु कॉपर आक्सीक्लोराइड (6 से 8 ग्राम प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें तथा उर्वरकों की संस्तुत मात्रा का थालों में प्रयोग करें।
- केले में वर्तमान मौसम में बीटिल कीट को प्रकोप होता है जिसके नियंत्रण हेतु मोनोक्रोटोफॉस (1.25 मि.ली. प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें अथवा कार्बोफ्यूरान 3 से 4 ग्राम प्रति पौधे की दर से गोफे में तथा मिट्टी में मिलायें।
- आम, अमरूद, आंवला, लीची एवं नीबू के नवीन बागों में जो पौधे किसी कारणवश मर गये हो उनके स्थान पर नये पौधे लगायें। आम के बाग के प्रथम 10 वर्षों में अधिक लाभ के लिये अंतःफसल के रूप में आलू, मिर्च, टमाटर, लोबिया तथा ग्लोडियोलेस की खेती की जा सकती है।
- शाखा गांठ कीट एवं टेंट कैटरपिलर की रोकथाम हेतु डाईमेथिओएट 2 मिली0/ली0 या क्यूनालफास 2 मिली0/ली0 की दर से 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।
- आम में रेड रस्ट एवं ऐन्थ्रकनोज के नियंत्रण के लिये कॉपर आक्सीक्लोराईड (3 ग्राम/लीटर पानी) का छिड़काव करें।

- आंवले में फलसड़न रोग की रोकथाम हेतु बोरेक्स (6 ग्राम प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें।
- नींबू में कैंकर रोग से बचाव हेतु कॉपर आक्सीक्लोराइड 3 ग्राम अथवा स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 600 मिलीग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

पशुपालन

- जलभराव वाले क्षेत्रों में गायों को जाने से रोके तथा फुटरॉट बीमारी से बचाने हेतु उनके बाड़ों में चूना डालें तथा पोटेशियम परमैगनेट के एक प्रतिशत घोल से खुर तथा फर्श की धुलाई करें।
- छोटे पशुओं जैसे भेंड़ व बकरी को पानी में भीगने से बचाये जिससे उनमें निमोनिया रोग की संभावना बढ़ जाती है।
- वर्तमान समय में ब्याने वाले पशुओं का विशेष ध्यान रखें। पशुओं में बच्चा पैदा होते ही बच्चे की नाल 1.5 से 2 इंच पर धागे से बांधकर नये ब्लेड से काटकर टिंचर आयोडीन का उपयोग करें।
- हरा चारा धोकर खिलायें जिससे पैरासाईट चारे के साथ पशुओं में न जायें।

मत्स्य पालन

- कतला, रोहू, नैन प्रजातियों के मत्स्य बीज तथा सिल्वर कार्प एवं ग्रास कार्प मत्स्य प्रजातियों का मत्स्य बीज वर्तमान में उ.प्र. मत्स्य विकास निगम व निजी क्षेत्र में उपलब्ध है अतःमत्स्य पालक जनपदीय कार्यालय से सम्पर्क कर मत्स्य बीज संचय करायें। यह समय मत्स्य संचय हेतु उपयुक्त समय है।
- मछलियों में वृद्धि हेतु पूरक आहार का प्रयोग मछलियों के वजन के 1 से 2 प्रतिशत तक किया जाय।
- मछलियों को निश्चित समय जहां तक हो सके एक स्थान पर ही भोजन दिया जाय।
- बरसात के मौसम में तालाब के जलीय पौधों का उन्मूलन करना जरूरी है। यह पौधे तालाब में उपलब्ध पोषक तत्वों का शोषण करता है।

रेशम

- शहतूती सेक्टर में मानसून व्यवसायिक क्राप का कीटपालन का कार्य प्रगति पर है, हेतु कीटपालकों को सुझाव दिया जाता है कि कीट मोल्ट से बाहर आने के बाद प्रथम फीडिंग के 30 मिनट पूर्व कीटों पर विजेता या आर.के.ओ. का छिड़काव करें जिससे कीटों में आने वाली बीमारियों को रोका जा सकें। आवश्यक तापमान एवं आर्द्रता बनाये रखें।
- कीटपालन ट्रे में रेशम कीट का सही फैलाव करें तथा क्लीनिंग नेट का प्रयोग करते हुये रेशम कीटों का अन्य ट्रे में स्थानांतरण करते हुये साफ–सफाई करें।
- पतझड़ फसल का शहतूती रेशम पाजल 20 से 25 सितम्बर के मध्य प्रारम्भ होने जा रहा है इस हेतु कीटपालन भवनों, उपकरणों, यथा कीटपालन ट्रे, कीटपालक रैक, चापिंग बोर्ड, क्लीनिंग नैट फीडिंग स्टैण्ड आदि का विशुद्धीकरण 5 प्रतिशत ब्लीचिंग पाऊडर के घोल या एक प्रतिशत क्लोरीन डाई आक्साईड (सैनीटेक) से कर लें तथा कीटपालन भवन की 40 कि.ग्रा. चूने के घोल में 200 ग्राम ब्लीचिंग पाऊडर डझलकर सावधानीपूर्वक पुताई की लेनी चाहिये।
- टसर रेशम कीटपालन में डाबा फसल का कीटपालन दिनांक 15 सितम्बर, 2023 से प्रारंभ होन जा रहा है, इस हेतु आवश्यक उपकरणों का विशुद्धीकरण कर लें।

वानिकी

- वृक्षारोपण उपरांत जो पौधें मर गये हो उनके स्थान पर गैप फिलिंग करें।

आपदा प्रबंधन

- उत्तर प्रदेश आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा जारी वज्रपात (आकाशीय बिजली) तथा सर्पदंश एवं डूबने से बचाव हेतु सुरक्षा के उपायों का पालन करें।
- सर्पदंश, वज्रपात या आकाशीय बिजली, डूबने अथवा उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा अधिसूचित आपदाओं से मृत्यु होने की दशा में पीड़ित परिवार को सरकार द्वारा रू. 4.00 लाख की अहैतुक सहायता दी जाती है। अधिक जानकारी के लिये जिलाधिकारी कार्यालय से सम्पर्क करें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 26 सितम्बर, 2024 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः– क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट *upcar.up.gov.in* पर भी उपलब्ध हैं।

- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां किसान मित्र ए.आई. चैट बॉट www.kisanmitraup.ai पर भी उपलब्ध हैं। किसान भाई इस पर भी सवाल पूछ सकते हैं।

34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक, उप कृषि निदेशक एवं जिला कृषि अधिकारी
43. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
44. प्रदेश के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्र
45. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
46. किसान मित्र चैट बॉट, कृषि समृद्धि टीम, कृषि विभाग, लखनऊ।
47. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
48. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

5-9-24

(विनोद कुमार तिवारी)
वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2024–25 की पन्द्रहवीं बैठक दिनांक 05 सितम्बर, 2024 की उपस्थिति

1. श्री पीयूष कुमार शर्मा, सचिव, उपकार, लखनऊ।
2. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
3. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ (ऑनलाइन) ।
4. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
5. डा. विनोद कुमार तिवारी, वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ।
6. डा. जय पाल, वैज्ञानिक अधिकारी, उपकार, लखनऊ
7. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ (ऑनलाइन)
8. श्री अमर सिंह, संयुक्त गन्ना आयुक्त, गन्ना विभाग, उत्तर प्रदेश
9. डा. अनिल दीक्षित, संयुक्त निदेशक प्रक्षेत्र, पशुपालन, उत्तर प्रदेश
10. श्री अमरनाथ मिश्र, सहायक प्राध्यापक (कृषि मौसम), आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
11. श्री नीरेन्द्र कमार, रेशम विकास अधिकारी, रेशम, उत्तर प्रदेश।
12. श्रीमती प्रियंका द्विवेदी, प्रोजेक्ट एक्सपर्ट, उ.प्र. डिजास्टर मैनेजमेंट एथारिटी, प्रथम तल पिकअप भवन, गोमती नगर, लखनऊ।
13. श्री नेत्रपाल यादव, उद्यान विशेषज्ञ, उद्यान भवन, सप्रू मार्ग लखनऊ।